एकलव्य संस्था के नवाचारी शिक्षणशास्त्रीय अभ्यास का कथात्मक व्यष्टि अध्ययन— एक विश्लेषण

नवीन कुमार मौर्य*
शिल्पी कुमारी**

इस शोध अध्ययन में शोधार्थी द्वारा शोध अध्ययन के कथात्मक प्रारूप को अपनाया गया। जिसका आधार नेरेटिव केस स्टडी डाइरैक्शन टेम्प्लेट है। शोधार्थी द्वारा इसके अंतर्गत तथ्यों को एक कथा के रूप में प्रस्तुत किया गया जो वर्णनात्मक तथा सत्यता पर आधारित है। शोधार्थी द्वारा कथात्मक व्यष्टि अध्ययन में कथा निर्माण की महत्वपूर्ण विशेषताओं को शामिल किया गया है, जैसे— पात्र, संवाद, देशकाल, संदर्भ आदि। निर्मित कथा के द्वारा कथात्मक व्यष्टि अध्ययन को प्रमुख पाँच भागों, जैसे— परिचय, मुख्य भाग, निष्कर्ष, शोध प्रश्न, शोध प्रश्न के उत्तर में विभाजित किया गया। इस शोध पत्र में एकलव्य संस्था में किए जा रहे नवीन शिक्षणशास्त्रीय प्रयासों को एक कथा के रूप में प्रस्तुत किया गया है। जिसमें शोधार्थी द्वारा समावेशी शिक्षा के घटकों को ध्यान में रखते हुए एकलव्य संस्था में कार्यरत अध्यापकों से टेलीफोन के माध्यम से अर्धसंरचित साक्षात्कार तथा अध्यापकों के द्वारा प्रदान की गई वीडियो एवं यू-ट्यूब वीडियो का अवलोकन, सूची के आधार पर अवलोकन किया गया तथा प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण किया गया। इस विश्लेषण से प्राप्त परिणामों के आधार पर अध्यापक एकलव्य संस्था द्वारा अपनाए जाने वाली समावेशी शिक्षणशास्त्रीय प्रक्रिया को अपनाकर अपनी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को समावेशी एवं रुचिकर बनाने के लिए कथात्मक रूप से विश्लेषण करने में सक्षम होंगे।

मध्य प्रदेश में वर्ष 1982 'एकलव्य' नामक एक अशासकीय संस्था की स्थापना हुई। जिसका उद्देश्य शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को रुचिपूर्ण एवं आनंददायक बनाना तथा शिक्षा सभी बालकों तक पहुँचाना है। साथ ही, शिक्षण का तरीका ऐसा हो कि बच्चे खुद ही सीखें एवं उनके ऊपर सीखने का कोई बोझ न हो, वे खेल-खेल में सीखें, शिक्षण-अधिगम एकदम आनंददायक हो और किसी भी प्रकार की

कोई बंदिश न हो। इसी दर्शन के आधार पर इस संस्था का नाम 'एकलव्य' रखा गया। यह संस्था बहुत से कार्यक्रमों का संचालन करती है, जैसे— शिक्षण प्रोत्साहन केंद्र, आँगनवाड़ी आदि।

कथा का शीर्षक है— पढ़ो लिखो आनंद करो

इस कहानी में मुख्य भूमिका निभाने वाले पात्र रमनलाल और शबनम (दो वरिष्ठ अध्यापक हैं, जो

* शोधार्थी, महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र 442001

** असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र 442001

इस संस्था में बहुत समय से कार्य कर रहे हैं), गौरी (लगभग 22 वर्ष की शिक्षिका है जो गाँव की एक लड़की है), रोहन, रिया, वर्षा एवं ललिता (विशिष्ट विद्यार्थी), जमुना एवं रुक्मणी (अभिभावक व समुदाय के प्रतिनिधि के रूप में) हैं। गौरी अनूठे तरीकों से शिक्षण-अधिगम का कार्य करती है। गौरी के माध्यम से कथा में शिक्षण के नवीन तरीके, शिक्षण में समुदाय को शामिल करना, विद्यार्थियों को शिक्षण से जोड़ने के नवीन तरीके, विद्यार्थियों की सक्रियता, परस्पर प्रतिपुष्टियाँ, शिक्षण में विद्यार्थियों की सहभागिता, शिक्षण सहायक सामग्री का स्वरूप व उस सामग्री की व्यवस्था, प्रोत्साहन विधियाँ, विद्यार्थियों का समूह में वर्गीकरण, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में समावेशन, शिक्षण सहगामी गतिविधियों आदि का विस्तृत वर्णन किया गया है। कहानी में पुरानी व नवीन घटनाओं का उल्लेख करते हुए शिक्षण-अधिगम के नए रूप को प्रस्तुत किया गया है।

(रमनलाल हल्का सांवले रंग, लंबी चौड़ी कद-काठी, हल्की सफेद दाढ़ी-मूँछ वाला, पचपन-छप्पन वर्ष का एक व्यक्ति है, जो अपने कमरे में खिड़की पर सिर टिकाए सामने के पेड़ और आसमान को गौर से देखते हुए किसी गहन सोच में खोया हुआ है, तभी शबनम ने कमरे में प्रवेश करते हुए रमनलाल को ऐसे हाल में देखकर पूछा)

“क्या हुआ रमन जी? कहाँ खोये हुए हो? सब कुछ ठीक है न?”

रमनलाल (ऐसे जवाब दिया जैसे उसकी कोई चोरी पकड़ी गई हो) — “नहीं... कुछ भी तो नहीं हुआ। हाँ, सब ठीक है।” शबनम (रमनलाल की

लड़खड़ाती हुई आवाज़ और चेहरे के भावों को पढ़ते हुए पूछा) — “फिर किस चिंता में गुम हो?”

रमनलाल — “अब तुमसे क्या छुपाना शबनम, तुम्हें तो सब पता ही है कि कुछ साल पहले मैं जब कक्षा में विद्यार्थियों को पढ़ाने गया तो क्या हुआ था?”

कुछ साल पहले जब मैं केंद्र में विद्यार्थियों को पढ़ा रहा था तभी कुछ विद्यार्थियों के अभिभावक केंद्र पर आकर कहने लगे कि वे अपने बच्चों को केंद्र पर भेजकर उनका समय नष्ट करते हैं। जितना समय ये यहाँ रहते हैं अगर उतने समय हमारे साथ मजदूरी पर जाएँ तो घर चलाने में मदद मिले, ये अभी तक कुछ नहीं सीख पाए। आप लोग इनको कुछ सिखाते ही नहीं हो। कभी पत्थर, बीज, लकड़ियाँ, मिट्टी इकट्ठी कराते हो तो कभी उन इकट्ठी चीजों से अलग-अलग खेल खिलवाते हो। सिर्फ़ ये ही नहीं कुछ अध्यापकों ने भी यह कह कर शिक्षण केंद्र ही छोड़ दिया कि दो घंटे के चक्कर में उनका पूरा दिन खराब होता है।

शबनम — “अच्छा ये समस्या है...!! देखिए रमन जी मुझे जहाँ तक लगता है कि ये सभी समस्याएँ भाषा की वजह से हो रही थीं। जितनी भी कविताएँ, कहानियाँ थीं वे हिंदी व अंग्रेज़ी में थीं, उन्हें हमने गोंडी और कोरकू बोली में भी अनुवादित किया, अध्यापक अथवा संचालक के लिए भी गाँव के ही 10वीं या 8वीं कक्षा पास व्यक्ति का चयन किया जो विद्यार्थियों की भाषा को समझते हैं। अब तो धीरे-धीरे सब ठीक हो गया और अध्यापकों व संचालनकर्ताओं के वेतन में भी गाँव वाले मदद करते हैं। तो अब ये विचार छोड़िए और चलिए, आज तो बाल सभा है न, विद्यार्थियों का दिन, तो चलिए देखते हैं आज बच्चे कैसे अपने नए-नए अनुभवों को साझा करते हैं।”

(दोनों ने बातें करते हुए केंद्र के उस प्रांगण की ओर प्रस्थान किया जिस ओर बहुत से बच्चे तीन गोलाकार आकृतियों में बैठे हुए हैं।)

सबसे छोटे गोले के बच्चे थोड़े बड़े हैं और आपस में ही कुछ खेल खेल रहे हैं। उससे बड़े गोले में संचालनकर्ता बार-बार आकर उनकी समस्याओं का निराकरण कर रहा है। सबसे बड़े गोले में संचालनकर्ता स्वयं विद्यार्थियों के साथ मिलकर अधिगम क्रियाएँ कर रहा है। अध्यापक भी विद्यार्थियों के साथ ज़मीन पर ही गोले में बैठे हैं। क्योंकि यहाँ पर टेबल-कुर्सी का उपयोग नहीं किया जाता है। कक्षा के एक छोर से दूसरे छोर तक एक रस्सी बंधी है जिस पर चार पृष्ठ वाली सुंदर व आकर्षक, छोटी-छोटी किताबें लटक रही हैं। ये किताबें विद्यार्थियों ने ही लिखी हैं। विद्यार्थियों ने किताब के अंतिम पृष्ठ पर अपना परिचय भी लिखा है, जैसे— नाम, कक्षा, समूह, कहानी या कविता का उद्देश्य आदि। इतना ही नहीं बच्चे एक-दूसरे की किताबें पढ़ रहे हैं तथा अपनी प्रतिक्रिया भी दे रहे हैं। एक ओर छोटे व आकर्षक अखबार हैं तो दूसरी ओर दीवारों पर विद्यार्थियों के द्वारा बनाए गए बहुत ही सुंदर चित्र लगे हुए हैं। कहीं कुछ कार्ड पड़े हैं जिन पर अंक या अक्षर लिखे हैं तो कहीं बीज, तीलियाँ, पत्तियाँ, छोटे-छोटे पत्थर, बिखरे पड़े हैं। संचालनकर्ता इन वस्तुओं की सहायता से ही विद्यार्थियों को संख्या ज्ञान सिखा रहा है। विद्यार्थी बहुत ही सक्रियता से इन गतिविधियों में मन लगाकर सहभागिता कर रहे हैं। ये सब देखकर रमनलाल को खुशी की अनुभूति होती है।

शबनम (गौरी को अपने पास बुलाते हुए)— “गौरी शिक्षण-अधिगम गतिविधियों में किसी तरह की कोई समस्या तो नहीं आ रही है?”

(गौरी लगभग बीस-बाईस वर्ष की, लंबे बालों वाली, पतली-सी, काफी चंचल, मिलनसार व नवाचारी लड़की है, जो एकलव्य संस्था में संचालनकर्ता का कार्य करने वाली इसी गाँव की 10वीं पास लड़की है। जो गोंडी व कोरकू बोली को तो अच्छे से बोलती ही है, साथ ही, वह सामान्य हिंदी व अंग्रेज़ी भी जानती है तथा विद्यार्थियों को अपने बचपन से जोड़कर शिक्षण-अधिगम कार्य करती है। सभी बच्चे भी उससे बहुत प्यार करते हैं।)

गौरी— “नहीं, मैडम कोई समस्या नहीं है। वैसे आज रोहन, रिया और वर्षा की माँ हम लोगों को मिट्टी और लकड़ी की चीज़ें बनाना सिखाने के लिए आने वाली हैं। इसके साथ ही वे हमें कहानियाँ और गीत भी सुनाएँगी।”

(गौरी ने शबनम की बात का उत्तर दिया और फिर अपने कार्य में व्यस्त हो गई। गौरी की बातें सुनकर शबनम व रमनलाल आगे बढ़ गए।)

रोहन— “दीदी...! मेरी माँ आई है।” दरअसल गौरी को सभी बच्चे प्यार से दीदी कहकर बुलाते हैं।

“अरे...! जमुना जी आइए... हम तो आप ही का इंतज़ार कर रहे थे। तो आज आप हमें मिट्टी की क्या-क्या चीज़ें बनाना सिखाएँगी?” गौरी ने रोहन की माँ को प्रणाम करते हुए बोला।

रोहन की माँ— “मैडम जी, मैं आज पहिया, गाड़ी और घर बनाऊँगी” जमुना ने गौरी की बात का उत्तर दिया।

गौरी— “ठीक है फिर... चलिए तो अब हम शुरू करते हैं...”

“मैडम जी और बच्चों थोड़ी-सी मिट्टी लो और उसमें हल्का-सा भूसा मिलाओ और थोड़ा-सा पानी

डालकर उसे अच्छे से आटे की तरह मिलाओ...हाँ मैडम जी, ऐसे ही... अब मिट्टी तैयार हो गई है इससे जो चाहे बना सकते हो।”

गौरी के साथ बच्चे भी मिट्टी को मिलाना सीख रहे हैं। विद्यार्थियों ने भी जमुना को देखकर बहुत ही सुंदर और छोटे-छोटे पहिये, गाड़ी और घर बनाए। गौरी इन्हीं चीजों की मदद से विद्यार्थियों को रेखागणित पढ़ाती है, जैसे— पहिया गोल है तो वह वृत्त है, गाड़ी में जो खिड़की है वह चौकोर है तो वह वर्ग है, घर की जो छत है वह लम्बी है जिसकी आमने-सामने की दीवारें बराबर हैं, इसीलिए यह आयत है। इतना बताकर गौरी ने विद्यार्थियों से पूछा कि अपनी-अपनी बनाई हुई चीजों में देखकर बताओ कि कितने वृत्त हैं? कितने वर्ग हैं? तथा कितने त्रिभुज व आयत हैं? जो बच्चे वर्ग, वृत्त व आयत की पहचान करना भी नहीं जानते थे, वे भी बड़ी ही उत्सुकता व सरलता से बता रहे हैं कि दीदी...! 5 वर्ग हैं, दीदी 2 आयत हैं या दीदी गाड़ी में 6 वृत्त हैं।

गौरी ने रिया की माँ को आते हुए देखकर बोला— “अरे! रुक्मणी जी आइए, आइए... काफी दिनों के बाद आई हैं आप, आज आप बच्चों को कौन-सी कहानी सुनाओगी।”

(रुक्मणी ने अपनी साड़ी के पल्ले से माथे पर आए हल्के पसीने को पोंछ कर पल्ले को कमर पर बाँधते हुए जवाब दिया)— “मैडम जी, मैं आज विद्यार्थियों को शेर और खरगोश की कहानी सुनाऊँगी।”

गौरी— “तो चलिए, देर किस बात की है।”

सभी बच्चे और गौरी अपने मिट्टी वाले हाथों को जल्दी-जल्दी धोकर बड़ी उत्सुकता व जिज्ञासा के साथ कहानी सुनने के लिए गोले में आकर बैठ गए।

(रुक्मणी ने बड़े ही रोचक व हाव-भाव पूर्ण तरीके से कहानी की शुरुआत की।)

“एक घना जंगल था, उसमें बहुत से जानवर एक साथ रहते थे। इन जानवरों में एक चीकू नाम का खरगोश भी रहता था। सभी जानवर मिल-जुलकर रहते थे। एक दिन जंगल में भैरों नाम का एक शेर आया... भैरों ने कुँए में छपाक से छलाँग लगा दी। इस तरह चीकू ने अपनी बुद्धि से सभी जानवरों को बचा लिया।” बच्चे बहुत ही तल्लीनता से कहानी सुन रहे थे ऐसा लग रहा था जैसे बच्चे वहाँ हैं ही नहीं। कहानी सुनकर बच्चे बहुत खुश थे।

कहानी खत्म होने पर गौरी ने रुक्मणी का धन्यवाद किया और विद्यार्थियों से कहानी से जुड़े कुछ प्रश्न पूछे, जैसे— चीकू कैसा खरगोश था? भैरों शेर क्यों बुरा था? भैरों शेर की क्या शर्त थी? भैरों शेर ने कुँए में छलाँग क्यों लगाई? आदि। बच्चे इन सवालों के जवाब ऐसे दे रहे थे मानो बच्चे वहीं जंगल में ही थे और अपनी आँखों से सब कुछ देख रहे थे।

इन सबके बाद गौरी ने सब विद्यार्थियों को खेलने के लिए कहा, सभी बच्चे अपने-अपने साथियों के साथ खेल रहे थे किंतु एक बच्ची सबसे अलग बैठी हुई थी। गौरी ने जब उसे देखा तो उस बच्ची के पास जाकर पूछा— “क्या हुआ ललिता? यहाँ क्यों बैठी हो? दोस्तों के साथ क्यों नहीं खेल रही हो?”

ललिता— “दीदी...! मेरे साथ कोई नहीं खेलता, मुझे सब मंदबुद्धि बोलते हैं। कहते हैं कि मुझे सब बातें देर से समझ आती हैं और मैं सबसे अलग हूँ। क्या सच में दीदी मैं सबसे अलग हूँ?”

(दरअसल ललिता एक ऐसी लड़की है जिसे समझने में थोड़ा समय लगता है। वह अपनी बातों को दूसरों तक पहुँचाने में हिचकिचाती भी है।)

गौरी—“नहीं...नहीं तो, ललिता हम सब अलग-अलग होते हुए भी एक ही हैं और तुम तो बहुत अच्छी हो, सब तुम्हें अपना दोस्त भी बनाना चाहते हैं। देखना चाहोगी?”

गौरी ललिता को ये कहकर अपने साथ उस जगह लेकर गई जहाँ उसके जैसे ही बच्चे खेल रहे थे जो पहले ललिता की ही तरह अपनी बात कहने में हिचकिचाते थे परंतु अब वे सब बच्चे अपनी बातों को आसानी से सबके सामने रखते हैं। गौरी ने इन विद्यार्थियों से ललिता को मिलवाया और झटपट कविता पढ़ी जमाव खेल खेलने के लिए सबको बुलाया। जल्दी-जल्दी सभी विद्यार्थियों को दो समूह में विभाजित कर दिया। इस खेल में जल्दी-जल्दी कविता की पढ़ी लगाकर कविता गानी होती है और हर बार अपने समूह में से बच्चे खुद एक ऐसे बच्चे को बाहर करते हैं जो जल्दी-जल्दी कविता गाने में सक्षम है।

इस तरह ललिता भी अपने समूह में अकेली बच गई। उसके समूह के सब बच्चे उसका हौसला आफजाई कर रहे हैं और उसे बार-बार बोल रहे हैं— ‘ललिता जल्दी करो, जल्दी करो हम जीत जाएँगे। ललिता तुम ही हमें जीत दिला सकती हो।’ अपने समूह के बच्चों की बातें सुनकर ललिता में सकारात्मकता आई और उसे महसूस हुआ कि वह भी समूह का एक हिस्सा है और समूह के सब बच्चे उसके दोस्त हैं। इस तरह ललिता ने जल्दी-जल्दी कविता पढ़ी जमाई और कविता

गाकर अपने समूह को जीत दिलाई। जीत के बाद ललिता के समूह में खुशी की एक लहर दौड़ गई। सभी बच्चों ने ललिता को गले लगाया और उसे बधाइयाँ दीं। अब ललिता को समझ आ गया था कि वह भी सब बच्चों में से एक है।

गौरी ने ऐसे ही बच्चों को अनेक गतिविधियों के द्वारा प्रोत्साहित किया। गौरी ने सभी तरह की शिक्षण सहायक सामग्री, जैसे— कंकड़-पत्थर, पत्तियाँ, बीज, कार्ड, मिट्टी की चीजें आदि की व्यवस्था की जिम्मेदारी बच्चों को ही दी हुई है। केवल वह बच्चों को कहती है कि ये चीज ले आओ तो बच्चे वही चीज लेकर आते हैं और शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में गौरी की मदद भी करते हैं। इस तरह शिक्षण सहायक सामग्री की व्यवस्था से लेकर उसके उपयोग तक बच्चे एक अहम भूमिका निभाते हैं।

कुछ दिन पहले कुछ बच्चे अंकों की पहचान नहीं कर पा रहे थे अर्थात् वे गिनती तो गिन रहे थे पर ये पहचान नहीं कर पा रहे थे कि 5 किसे कहते हैं? या 19 किसे कहते हैं या 7 किसे कहते हैं? इसके लिए गौरी ने बच्चों को एक खेल खिलवाया— “सुनो! बच्चों आज हम एक खेल खेलेंगे जिसका नाम है— ‘अंकों का खेल’। इस खेल में मैं गिनती का एक अंक (अंक कार्ड के साथ) बोलूँगी फिर मेरे बाद जिसकी बारी होगी वह एक अंक छोड़कर (अंक कार्ड बताते हुए) बोलेगा। फिर उसके बाद वाला बच्चा एक अंक छोड़कर बोलेगा। ठीक है?”

“ठीक है दीदी...” सभी बच्चों ने उत्सुकता से एक साथ जवाब दिया। इसी खेल-खेल में बच्चों को अंकों की पहचान हो गई और अब बच्चे आसानी से अंक बता पाते हैं।

गौरी को आज भी याद है कि जब वह केंद्र पर आई थी तो बच्चों को समझने में बहुत मुश्किल हो रही थी, बाकायदा उसकी ट्रेनिंग भी हुई थी। केंद्र में जो भी संचालनकर्ता के लिए चयन किया जाता है उसकी कुछ दिन की ट्रेनिंग होती है जैसे बच्चों को कैसे पढ़ाना है? बच्चों के साथ कैसे व्यवहार करना है? आदि। फिर भी, गौरी के सामने समस्या आ रही थी कि जो बच्चे सीखने में थोड़ा समय लगाते हैं, उन बच्चों को कैसे सिखाए? इस समस्या के समाधान में अन्य संचालनकर्ताओं ने उसकी मदद की। गौरी को समझाया कि अगर कोई बच्चा एक तरीके से नहीं सीखता तो उसे दूसरे तरीके से सिखाना पड़ता है। चाहे उसके साथ अधिक समय ही क्यों न लगाना पड़े। जैसे बच्चों को डाइस (पासा) वाला खेल खिलवाना। इस खेल में बच्चे डाइस उछालेंगे, जितना अंक आएगा कंकड़ की ढेरी से उतने ही कंकड़ वो जीत जाएंगे। इसमें बच्चों को मजा भी आएगा और वे अंकों को भी सीख पाएंगे। गौरी या अन्य संचालनकर्ताओं (अध्यापकों) के समक्ष शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया से संबंधित कोई भी समस्या उत्पन्न होती है तो सभी अध्यापक परस्पर मीटिंग का आयोजन करके सुझाव ले लेते हैं। सप्ताह में एक या दो बार गौरी की मीटिंग होती है जिसमें कक्षा में जाने से पूर्व व बाद के अनुभवों पर चर्चा होती है।

“दीदी...! दीदी...! आइए हम लोगों ने बालसभा की तैयारी कर ली है। अब हम प्रोग्राम शुरू करने जा रहे हैं।” ललिता व वर्षा की आवाज़ से गौरी अपनी सोच से बाहर निकली और बच्चों के साथ उस ओर चल दी जिधर बाल सभा का आयोजन किया जा रहा था।

वहाँ पहले से ही रमनलाल व शबनम मौजूद थे और बच्चों के साथ ही अर्द्धगोले में ज़मीन पर बैठे थे। बालसभा का आयोजन हर शनिवार को बच्चों द्वारा ही किया जाता है। इसके नियोजन से व्यवस्था तक सारे कार्य बच्चों द्वारा ही किए जाते हैं। इन सब कार्यों को बच्चे इतनी सहजता से करते हैं, जैसे वे बहुत बड़े संयोजक हों।

गौरी के आते ही रोहन, ललिता, वर्षा, रिया, करण आदि बच्चों ने कार्यक्रम शुरू किया क्योंकि आज इनके समूह की बारी है। किसी बालक ने कहानी, किसी ने कविता तो किसी ने नई-नई खेल विधियों से सबको परिचित कराया। बच्चों ने पिछले एक हफ़्ते में जितना भी कुछ कार्य अथवा विशेष घटना का अनुभव किया उन सब अनुभवों को आज सबके साथ साझा किया। अंत में रोहन ने सबके सामने एक रिपोर्ट प्रस्तुत की।

रिपोर्ट प्रस्तुत करते हुए रोहन ने बताया— “पिछले सप्ताह हमें गौरी दीदी ने एक काम दिया था कि पूरे गाँव का सर्वे करो और पता लगाओ कि गाँव में कितने नल हैं? कितने नल खराब हैं? तथा कितने नलों में पानी आता है? हम सभी बच्चों ने इस कार्य को चार दिन में पूरा किया और अपने अखबार में इसकी रिपोर्ट भी लगाई। उसमें हमने यह तक लिखा है कि कितनी बार हत्ती मारने पर नलों में पानी आता है, गाँव में ऐसे कितने नल हैं? कितने नल खराब हैं? एवं कितने नलों में पानी नहीं आता है। अब आगे के विषय में गौरी दीदी बताएंगी।”

सभी बच्चों ने अन्य बच्चों की प्रस्तुति और रोहन के द्वारा प्रस्तुत की गई रिपोर्ट के लिए तालियाँ बजाईं और गौरी के स्वागत में भी तालियाँ बजाईं।

गौरी ने बालसभा में सभी को बताया कि इस सर्वे का क्या लाभ हुआ। गौरी बड़े ही हर्ष के साथ बताया, “मुझे यह बताते हुए बहुत ही हर्ष की अनुभूति हो रही है कि इस सर्वे की रिपोर्ट को जब बच्चों ने अखबार में लिखा तो इस रिपोर्ट से ग्राम पंचायत ने नल न चलने वाली बात पर गौर किया और अब ग्राम पंचायत इन खराब नलों को ठीक कराने की जिम्मेदारी ले रही है। बजट की प्रक्रिया सम्पन्न हो चुकी है। कुछ ही दिनों में खराब नलों को ठीक कर दिया जाएगा इसके लिए पूरे गाँव ने बच्चों को धन्यवाद भी दिया है।”

ये खबर सुनकर पूरे केंद्र में खुशी की लहर दौड़ गई और रमनलाल व शबनम की खुशी का तो ठिकाना ही नहीं रहा। चारों ओर तालियों की गड़गड़ाहट और हँसने की आवाज़ गूँजने लगी। इसके साथ ही आज की बालसभा समाप्त हुई। सभी बच्चों ने मिठाई खाई और अपने-अपने घर की ओर प्रस्थान किया। गौरी ने भी बच्चों की मुस्कान को देखकर एक प्यारी सी मुस्कान दी और रमनलाल जी को धन्यवाद देते हुए कहा— “सर आपने मुझे इस संस्था में कार्य करने के लिए चयन कर फिर से मेरा बचपन जीने की राह दी है। धन्यवाद सर, धन्यवाद मैम...!” इतना कह कर गौरी ने अपनी स्कूटी स्टार्ट की और अपने घर की ओर चली गई।

रमनलाल खुशी से शबनम की ओर देखकर बोले, “अगर उस दिन हम हार मानकर ये केंद्र बंद कर देते तो शायद हम ये सब न देख पाते।” शबनम ने मुस्कुराकर रमनलाल की बात में सहमति जताई और फिर दोनों अपने-अपने कक्ष की ओर लौट आए।

कथा का निष्कर्ष

किसी भी नये कार्य की शुरुआत में बहुत-सी मुश्किलें आती हैं। किंतु यदि हम इन मुश्किलों से बिना डरे कार्य करते रहे तो वह कार्य बहुत ही सरलता से पूर्ण हो जाता है। इस कहानी में भी यदि रमनलाल शिक्षण-अधिगम के कार्यों में आने वाली मुश्किलों से डरकर संस्था के इस कार्य को रोक देता तो शायद आज उसे ये सफलता न मिलती। जिसमें छोटे-छोटे बच्चों ने मात्र अधिगम ही नहीं, बल्कि गाँव के लोगों की समस्या को भी हल किया। इतना ही नहीं शुरुआत में जो समुदाय के लोग इस प्रकार के शिक्षण-अधिगम कार्य से नाखुश थे, वे भी आज स्वयं केंद्र पर आकर शिक्षण कार्य में अपनी सहभागिता निभा रहे हैं। निष्कर्ष रूप में यही कहा जा सकता है कि शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को आनंददायक व रुचिपूर्ण बनाने में हमें हर संभव प्रयास करना चाहिए। प्रत्येक सामान्य दिखने वाली चीज़ का प्रयोग करने पर वह विशेष हो सकती है। इसीलिए प्रत्येक चीज़ को एक विशेष दृष्टि से देखना चाहिए। शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को सुचारु रूप से चलाने के लिए सबसे महत्वपूर्ण घटक है— विद्यार्थी और अध्यापक का आपसी जुड़ाव। अध्यापक एवं विद्यार्थी का संबंध जितना अधिक मधुर होगा उतना ही शिक्षण-अधिगम कार्य प्रभावी होगा। अध्यापक को अपने साथी अध्यापकों से भी बहुत कुछ सीखने को मिलता है। उनसे मित्रवत व्यवहार करना चाहिए। विद्यार्थी का अपने समूह-साथी से भी घनिष्ठ संबंध होना चाहिए क्योंकि अधिगम का बहुत ज्यादा हिस्सा वे सब अपने समूह-साथी

से सीखते हैं। इनकी घनिष्ठता को बढ़ाने का कार्य अध्यापक ही कर सकते हैं।

कथा से उत्पन्न प्रश्नों का विश्लेषण

प्रश्न 1. समावेशी अधिगम के संचालन हेतु एकलव्य संस्था की कक्षा-संरचना किस प्रकार की है?

उत्तर— एकलव्य संस्था की कक्षा-संरचना बहुत सामान्य-सी होते हुए भी अपने आप में विशिष्ट है। अध्यापक-शिक्षार्थी अनुपात 1:35 है, जो कि शिक्षण-अधिगम कार्य की दृष्टि से बहुत संतोषजनक है। सभी बच्चे एक गोलाकार आकृति में ज़मीन पर बैठते हैं तथा उनके साथ अध्यापक भी बैठते हैं। कक्षा को तीन स्तरों— उच्च स्तर, मध्य स्तर तथा निम्न स्तर में विभाजित किया जाता है। ये तीनों समूह अलग-अलग बैठते हैं। उच्च स्तर के समूह में बच्चों की संख्या कम होती है, ये बच्चे अध्यापक के द्वारा दिए गए कार्यों को स्वयं ही पूर्ण करते हैं। मध्य स्तर के समूह में बच्चों की संख्या उच्च स्तर समूह से अधिक होती है, इस समूह के बच्चों को अध्यापक के निर्देशों की आवश्यकता पड़ती रहती है। इसीलिए अध्यापक बार-बार इस समूह में बैठे बच्चों को मार्गदर्शित करते रहते हैं। अंतिम समूह, निम्न स्तर के समूह में बच्चों की संख्या अन्य दोनों समूहों से ज़्यादा होती है एवं इस समूह में अध्यापक अधिक समय तक रहते हैं। क्योंकि इन विद्यार्थियों के साथ अध्ययन-अध्यापन कार्य अधिक करना होता है। कक्षा में समूह में बैठने की व्यवस्था से अध्यापक का सभी विद्यार्थियों से संवाद सरलता से होता है। विद्यार्थी भी अध्यापक द्वारा की जा रही क्रियाओं को आसानी से देख पाते हैं। कक्षा की दीवारों पर विद्यार्थियों के द्वारा बनाई

गई विभिन्न सृजनात्मक रचनाएँ लगाई गई हैं जो विद्यार्थियों की सृजनात्मकता की पहचान है। ये सभी बातें समावेशी अधिगम को बढ़ावा देती हैं तथा समावेशी शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया को सफलतापूर्वक पूर्ण करती हैं।

प्रश्न 2. समावेशी अधिगम के दौरान विद्यार्थियों की अधिगम-संलग्नता किस प्रकार की है?

उत्तर— समावेशी अधिगम के दौरान विद्यार्थियों की अधिगम-संलग्नता अधिक सक्रिय रूप में होती है। विद्यार्थी प्रत्येक कार्य को बहुत ही सक्रियता से कर रहे हैं। शिक्षण सहायक सामग्री के निर्माण से लेकर उन सामग्रियों के रखरखाव तथा उन सामग्रियों के प्रयोग में अपनी सहभागिता व उत्सुकता दिखाते हैं। कक्षा में सवाल पूछने व अपने उत्तरों का स्पष्टीकरण करने में विद्यार्थी हिचकिचाते नहीं हैं। बिना किसी घबराहट के अपनी बातों को दूसरों के समक्ष रखते हैं। अध्यापक हर समय विद्यार्थियों की संलग्नता की जाँच करते रहते हैं, जैसे— सवाल पूछकर या कोई गतिविधि करवाकर। शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के समय सभी विद्यार्थी बहुत ही उत्सुक व जिज्ञासु रहते हैं। विद्यार्थियों की अधिगम-संलग्नता के लिए अध्यापक बहुत-सी गतिविधियों का आयोजन करते हैं, जैसे— गड़बड़ संख्या या चोर संख्या के द्वारा अध्यापक विद्यार्थियों में संख्या के प्रति रोचकता उत्पन्न करते हैं। विद्यार्थी गड़बड़ संख्या या चोर संख्या की गतिविधि में सहभागिता निभाने के लिए झटपट तैयार हो जाते हैं। इस गतिविधि में अध्यापक एक बच्चे को एक संख्या बता देता है तथा दूसरे बच्चे को पुलिस की तरह उस अज्ञात संख्या वाले बच्चे का पता लगाना होता है। ये गतिविधि एक तरह

से चोर-पुलिस के खेल की तरह है। इसीलिए बच्चे इसमें बहुत रोचकता से सहभागिता करते हैं। इस प्रकार की गतिविधियों में विद्यार्थी तो संलग्न रहते ही हैं साथ ही अध्यापक भी अपनी अधिगम संलग्नता को परखते रहते हैं। उक्त अवलोकन के आधार पर स्पष्ट रूप में कह सकते हैं कि अधिगम के दौरान सभी विद्यार्थियों की अधिगम संलग्नता अच्छी थी।

प्रश्न 3. एकलव्य संस्था की कक्षाओं में अध्यापक-अध्यापक, अध्यापक-विद्यार्थी तथा विद्यार्थी-विद्यार्थी अंतर्क्रिया किस प्रकार की है?

उत्तर— एकलव्य संस्था में अध्यापक विद्यार्थियों को उनके नाम से बुलाते हैं। उनके साथ ज़मीन पर ही समूह में बैठते हैं। यदि विद्यार्थियों को कोई भी समस्या होती है तो वे अध्यापकों से बिना किसी घबराहट के अपनी समस्या साझा करते हैं। अध्यापक भी विद्यार्थियों की सहायता एक अभिभावक की तरह करते हैं। विद्यार्थी भी अध्यापकों का सम्मान अपने अभिभावकों की तरह ही करते हैं। अध्यापक-अध्यापक परस्पर एक सहायक के रूप में कार्य करते हैं। अपनी-अपनी शिक्षण-शैलियों व अनुभवों को परस्पर साझा भी करते हैं ताकि शिक्षण में आने वाली समस्याओं अथवा चुनौतियों का सामना किया जा सके। भविष्य की योजनाओं के निर्माण में भी अध्यापक परस्पर चर्चा करते ही हैं। साथ ही, उन चर्चाओं में विद्यार्थियों व समुदाय के लोगों को भी शामिल करते हैं एवं उनके विचारों को भी स्वीकृत करते हैं। इससे अध्यापकों के परस्पर व विद्यार्थियों तथा समुदाय के संबंधों में मधुरता आती है। विद्यार्थी भी अपने समूह-साथी के साथ सहयोगात्मक व्यवहार करते हैं तथा एक-दूसरे को प्रोत्साहित करते

हैं और प्रतिपुष्टि भी देते हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि एकलव्य संस्था में अध्यापक-विद्यार्थी, अध्यापक-अध्यापक, विद्यार्थी-विद्यार्थी संबंध बहुत ही मधुर हैं। इस प्रकार उपरोक्त अवलोकन से स्पष्ट है कि शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में हर प्रकार का समावेशन संभव है।

शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत शोध पत्र पत्र में एकलव्य संस्था के द्वारा शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को रुचिकर व प्रभावी बनाने के लिए किए जा रहे नवीन प्रयासों को कथात्मक रूप में विश्लेषित किया गया है। इस शोध पत्र के माध्यम से अध्यापकों को शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया के दौरान आने वाली समस्याओं के उचित समाधान हेतु दिशा-निर्देश प्राप्त होंगे। जिससे अध्यापकों को शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी व अधिक रुचिकर बनाने के लिए सहायता प्राप्त होगी। शोध पत्र में झटपट कविता पट्टी जमाना, जल्दी बोल, एक अंक छोड़कर गिनती या अक्षर का खेल आदि जैसी खेल गतिविधियों को समझाया गया है, जिनकी सहायता से अध्यापक विद्यार्थियों को शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया से जोड़ पाते हैं। यह खेल गतिविधियाँ अध्यापकों को मार्गदर्शन प्रदान करेंगी, क्योंकि इन अनोखी व नवीन खेल गतिविधियों के द्वारा शिक्षण-अधिगम को सरल व रुचिकर रूप दिया जा सकता है। यह शोध पत्र अध्यापकों को मंदगति से सीखने वाले विद्यार्थियों का सामान्य गति से सीखने वाले विद्यार्थियों के साथ समावेशन के लिए भी मार्गदर्शन करेगा। इस शोध पत्र से अध्यापकों को शिक्षणशास्त्र को समावेशी व नवाचारी बनाने में सहायता मिलेगी।

संदर्भ

- अशर्तो, एन. 1990. इंकलूसिव एजुकेशन— करिकुलम एंड पेडागॉजी. *द जर्नल ऑफ इंकलूसिव स्कॉलशिप एंड पेडागॉजी*. 1(1), पृष्ठ संख्या 30–35. <https://www.jstor.org> से लिया गया.
- एकलव्य फाउंडेशन. शिक्षा प्रोत्साहन केंद्र, भाग 1. 26 अप्रैल 2013 : <https://youtu.be/8yfbv3aAfsI> से लिया गया.
- . देअर्स मोर टू स्कूल, पार्ट 1. 22 अप्रैल 2013 : https://youtu.be/_bdSAelmgHA से लिया गया.
- . 3 अप्रैल 2013 : <https://youtu.be/mqhFokmXgOk> से लिया गया.
- . 3 अप्रैल 2013 : <https://youtu.be/pinKqQ5T7Lo> से लिया गया.
- . 29 अप्रैल 2013 : <https://youtu.be/kAfXEDc2zR4> से लिया गया.
- . 22 अप्रैल 2013 : <https://youtu.be/DsPypK5i-9o> से लिया गया.
- . 22 अप्रैल 2013 : <https://youtu.be/v8vTVZVfVCE> से लिया गया.
- . 3 अप्रैल 2013 : <https://youtu.be/OuFZVP0zbqk> से लिया गया.
- . 21 अप्रैल 2013 : <https://youtu.be/iBoNi1RxjQQ> से लिया गया.
- . 18 नवंबर 2017 : https://youtu.be/Dbvk_wrxLDI से लिया गया.
- . 18 नवंबर 2017 : <https://youtu.be/EiL7-PRBkHU> से लिया गया.
- . 18 नवंबर 2017 : <https://youtu.be/Xe7VOFu6tHw> से लिया गया.
- कट्ज़, जे. 2013. द श्री मॉडल ऑफ यूनिवर्सल डिजाइन फ़ार लर्निंग (यू.डी.एल.)— एंगेजिंग स्टूडेंट्स इन इंकलूसिव एजुकेशन. *कैनेडियन जर्नल ऑफ एजुकेशन*. 36(1), पृष्ठ संख्या 153–194. <https://www.jstor.org> से लिया गया.
- कांडपाल, के. 2018. समावेशन की कुंजी कक्षा-कक्ष प्रक्रियाएँ. *भारतीय आधुनिक शिक्षा*. 39(2), पृष्ठ संख्या 37–43.
- कार्बेट, जे. 2003. टीचिंग एप्रोच विच सपोर्ट इंकलूसिव एजुकेशन— ए कनेक्टिव पेडागॉजी. *ब्रिटिस जर्नल ऑफ स्पेशल एजुकेशन*. 28(2). doi:<https://doi.org/10.1111/147-8527.00219> से लिया गया.
- कुमारी, एस. 2015. अध्यापकों की भाषाई निष्ठुरता और समावेशी शिक्षा. *भारतीय आधुनिक शिक्षा*. 36(1), पृष्ठ संख्या 39–46.
- जाकुपैक, जे., आर. रुशर्तो, एम. जाकुपैक और जे. लुन्दत. 1996. दिस श्री प्रोड्गेड एप्रोच बेनेफिट्स ऑल स्टूडेंट्स— इंकलूसिव एजुकेशन. *द साइंस टीचर*. 63(5), पृष्ठ संख्या 40–43. 20 अगस्त 2019 को <http://www.jstor.org> से लिया गया.
- झा, एम.एम. 2010. *समावेशी शिक्षा दृष्टिकोण और प्रक्रियाएँ*. प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली.
- तनेजा, पी. 2018. *एक्सप्लोरिंग रोल ऑफ टीचर्स इन इंकलूसिव पेडागॉजी*. केंद्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली.
- फ्लोरियान, एल. और के.बी. हवकिंस. 2011. एक्सप्लोरिंग इंकलूसिव पेडागॉजी. *ब्रिटिस एजुकेशनल रिसर्च जर्नल*. 37, पृष्ठ संख्या 813–828. doi:10.1080/01411926
- भारती. 2015. समावेशी शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में सेवा-पूर्व विशेष अध्यापक प्रशिक्षण की सार्थकता. *भारतीय आधुनिक शिक्षा*. 36(2), पृष्ठ संख्या 84–95.
- मंगल, ए.के. और एस. मंगल. 2017. *समेकित विद्यालय की स्थापना*. शिप्रा पब्लिकेशंस, नई दिल्ली.

- यादव, ए. 2018. समावेशी शिक्षा प्रतिमान में कक्षा शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया. *भारतीय आधुनिक शिक्षा*. 39(1), पृष्ठ संख्या 106–114.
- वर्मा, ए.के. 2014. समावेशी शिक्षा. *भारतीय आधुनिक शिक्षा*. 35(2), पृष्ठ संख्या 24–29.
- शर्मा, डी.ए. 2008. विशिष्ट शिक्षा का प्रारूप (मुख्यधारा एवं समन्वित शिक्षा). आर. लाल बुक डिपो, उत्तर प्रदेश.
- सिंह, ए.के. 2008. भारत में समावेशित शिक्षा का स्वरूप. *परिप्रेक्ष्य*, 15(1), पृष्ठ संख्या 81–86.
- सोलर, के. 1995. एन इंक्लूसिव पेडागॉजी इन मैथमेटिक्स एजुकेशन. *एजुकेशनल स्टडीस इन मैथमेटिक्स*. 28(3), पृष्ठ संख्या 311–333. <https://www.jstor.org> से लिया गया.